शिव की यात्रा: राम का अनुसंधान

जब कुछ भी नहीं था,
न स्थान, न समय,
न रूप, न नाम,

था वह चैतन्य निर्विकार,
निराकार और अनादि था।

उस चैतन्य के भीतर
जगी थी एक चाह —
सृष्टि को प्रकट करने की।

उस परम चैतन्य की चाह से
एक दिव्य साकार रूप प्रकट हुआ।

उस रूप को नहीं थी अपनी कोई पहचान,
था तो बस अपने अस्तित्व की
स्वयं में ही खोई एक अनुभूति,
और एक अनुत्तरित प्रश्न —
“मैं कौन हूँ?”

यह प्रश्न बार-बार उनके मानस में उठता रहा,
और उनके हृदय तक पहुँचकर,
एक लहर की तरह उन्हें भीतर तक झंकृत करता रहा।

क्षण बीते,
प्रहर बीते,
दिन बीते,
मास बीते,
वर्ष बीते,
युग बीत गए —

और वह लहर
उनके मानस से उठकर
उनके हृदय तक बार-बार पहुँचती रही,
मानो उनका अस्तित्व बन गई हो।

वह लहर तरंगों में बदली,
तरंगें नाद में परिवर्तित हुईं,
नाद से ध्वनि का उदय हुआ,

राम रहस्य @RamRahasya.com

शिव की यात्रा: राम का अनुसंधान

और उस ध्वनि की निरंतर धारा
अनाहत नाद के रूप में साँसों से चलने लगी।

यह अनाहत नाद
बाहरी रूप से लगभग मौन की अवस्था में था,
पर अंदर ही अंदर
उनके हृदय के अंतःपटल पर
ऊर्जा के स्रोत के रूप में उभर रहा था।

उनका हृदय
मानो एक प्रकाश-पुंज से भर रहा था,
एक परमानंद की अनुभूति हो रही थी।

अब इस दिव्य साकार रूप के भीतर
नई जिज्ञासाएँ जागीं—
इस बार, ये प्रश्न उनके हृदय में उभरे,
और वहाँ से उठकर
उनके मानस में गूँजने लगे:

"यह प्रकाश-पुंज क्या है?"
"यह परम आनंद कैसा है?"
"कहीं यह मेरे प्रश्न का उत्तर तो नहीं?"

अब उनका मानस सतर्क हुआ—
उस ध्वनि की ओर,
उस ऊर्जा की ओर,
जो प्रकाश बनकर उन्हें भीतर तक आलोकित कर रही थी।

वे सोचने लगे—
यह कौन सी ध्वनि है,
जो बार-बार मेरे अंदर से निकल रही है!
यह क्यों इस तरह मेरे अंतर्मन को छू रही है!
यह मेरे भीतर की गहराइयों से ही तो उभर रही है!
पर यह कौन-सा भाव है,
जिसमें मैं रमा जा रहा हूँ?

इस प्रश्न के हृदय में आते ही,
वे उस प्रकाश-पुंज को स्पष्ट देख पाते हैं।

राम रहस्य @RamRahasya.com

शिव की यात्रा: राम का अनुसंधान

आँखें तो अब भी बंद हैं,
वे उन्हीं में रम जाते हैं,
परम आनंद के अतिरेक से भर जाते हैं,
और सहज ही पूछ बैठते हैं —
“मैं कौन हूँ?”

अब वहाँ आप हैं,
मेरे मन को आनंद भरने वाले।
आप ही सब कुछ हैं —
यह तो मैं जान गया।
हे प्रभु, यह बता दीजिए —
मैं कौन हूँ?

प्रभु मुस्कुरा उठते हैं —
“मैं सब कुछ हूँ!”

आप नेत्र खोलिए
और देखिए मुझे।
मैं तो कुछ नहीं हूँ,
जो हैं — आप ही हैं।
आप ही सर्व हैं,
आप ही सर्वस्व हैं,
आप ही शिव हैं।

प्रभु के भाव को समझ
शिव मन ही मन भरमाए।
अब वे मुस्कुराए —
“मैं तो जड़ था,
आप में रम कर
मैं चेतन हुआ।”

अब मैं समझ गया,
आप तो अभिराम हैं —
जड़-चेतन जिसमें है,
रम-भाव से रमा हुआ,
आप वह राम हैं।

राम रहस्य @RamRahasya.com

शिव की यात्रा: राम का अनुसंधान

आप निराकार हैं,
फिर भी मेरे भीतर
साकार होकर प्रकट हुए।

आप ही सब कुछ हैं,
आप ही मेरे प्रश्न का उत्तर हैं।
अब न मैं रहा,
न मेरा "मैं कौन हूँ?"
बस आप ही शेष हैं —
शिव रूप में, राम भाव में,
प्रेम में, प्रकाश में,
अनाहत नाद में।

राम रहस्य @RamRahasya.com